श्री अरबिंदो घोष

जन्म: 15 अगस्त 1872, कोलकाता

मृत्यु: 5 दिसंबर 1950

श्री अरबिंदो एक भारतीय दार्शनिक, योग गुरु, महर्षि, कवि और भारतीय राष्ट्रवादी थे। उन्होंने पृथ्वी पर दिव्य जीवन के दर्शन को प्रतिपादित किया और पुडुचेरी में एक आश्रम की स्थापना की। उनकी महाकाव्य कविता सावित्री उनकी सबसे बड़ी कृतियों में से एक है। अंग्रेजों के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भागीदारी ने उन्हें लोकप्रियता दी और धीरे-धीरे एक आध्यात्मिक और योग गुरु बनने के लिए विकसित हुए। वह आध्यात्मिकता के एक नए मार्ग के साथ आए जिसे 'एकात्म योग' के रूप में जाना जाता है। उनकी शिक्षाओं का मुख्य उद्देश्य लोगों की चेतना के स्तर को बढ़ाना और लोगों को उनके सच्चे स्व के बारे में जागरूक करना था। उन्होंने भारतीय संस्कृति, देश के सामाजिक-राजनीतिक विकास, आध्यात्मिकता आदि पर केंद्रित कई पुस्तकें लिखी थीं।

Sri Aurobindo Ghose

Born: 15 August 1872, Kolkata
Died: 5 December 1950

Sri Aurobindo was an Indian philosopher, yoga guru, maharishi, poet, and Indian nationalist. He propounded a philosophy of divine life on earth and founded an ashram in Puducherry. His epic poem Savitri is one of the greatest works of him. His participation in the Indian freedom struggle against the British gave him popularity and gradually evolved to become a spiritual and yogic guru. He came up with a new path of spirituality known as 'integral yoga'. The main objective of his teachings was to increase the level of consciousness of people and to aware people of their true selves. He had written several books focused on Indian culture, socio-political development of the country, spirituality, etc.

শ্রী অরবিন্দ ঘোষ

জন্ম: 15 আগস্ট 1872, কোলকাতা
মৃত্যু: 5 ডিসেম্বর 1950

শ্রী অরবিন্দ ছিলেন একজন ভারতীয় দার্শনিক, যোগগুরু, মহর্ষি, কবি এবং ভারতীয় জাতীয়তাবাদী। তিনি পৃথিবীতে ঐশ্বরিক জীবনের একটি দর্শন উত্থাপন করেছিলেন এবং পুদুচেরিতে একটি আশ্রম প্রতিষ্ঠা করেছিলেন। তাঁর মহাকাব্য সাবিত্রী তাঁর অন্যতম শ্রেষ্ঠ রচনা। ব্রিটিশদের বিরুদ্ধে ভারতীয় স্বাধীনতা সংগ্রামে তার অংশগ্রহণ তাকে জনপ্রিয়তা দেয় এবং ধীরে ধীরে একজন আধ্যাত্মিক ও যোগিক গুরুতে পরিণত হয়। তিনি 'অখণ্ড যোগ' নামে পরিচিত আধ্যাত্মিকতার একটি নতুন পথ নিয়ে এসেছিলেন। তাঁর শিক্ষার মূল উদ্দেশ্য ছিল মানুষের চেতনার স্তর বৃদ্ধি করা এবং মানুষকে তাদের প্রকৃত আত্ম সম্পর্কে সচেতন করা। তিনি ভারতীয় সংস্কৃতি, দেশের আর্থ-সামাজিক-রাজনৈতিক উন্নয়ন, আধ্যাত্মিকতা প্রভৃতির উপর দৃষ্টি নিবদ্ধ করে বেশ কিছু বই লিখেছেন।